"कूड़ और सच"

• कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसार । कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बैसणहार ।

अर्थः- ये सारा जगत छल रूप है जैसे मदारी का सारा तमाशा एक छलावा है, इसमें कोई राजा है और कई लोग प्रजा हैं । ये भी मदारी के रूपए और खोपे आदि दिखाने के तरह छल ही हैं ।

कूड़ सुइना कूड़ रुपा कूड़ पैन्हणहार । कूड़ काइआ कूड़ कपड़ कूड़ रुप अपार ।

अर्थः- इस जगत में कहीं इन राजाओं के शामियाने व महल - माढ़ियां है, ये भी छल रूप हैं और इनमें बसने वाला राजा भी छल ही है । सोना, चाँदी और सोने - चाँदी को पहनने वाले भी भ्रम ही हैं । ये शारीरिक आकार, सुंदर - सुंदर कपड़े और शरीरों का बेअंत सुंदर रूप ये भी सारे ही छलावे ही हैं । प्रभु - मदारी, ये तमाशे आए हुए जीवों को खुश करने के लिए दिखा रहा है । प्रभु ने कहीं मनुष्य बना दिए, तो कहीं स्त्रीयां ये सारे भी छल रूप हैं, जो इस स्त्री - मर्द वाले संबंध - रूपी छल में खचित हो के ख्वार हो रहे हैं ।

कूड़ मीआ कूड़ बीबी खपि होए खार । कूड़ि कूड़ै नेह लगा विसरिआ करतार ।

अर्थः- इस दृष्टमान छल में फसे हुए जीव का छल में ही मोह बन गया है, इसलिए इसे अपने को पैदा करने वाला भूल गया है । इसे याद नहीं रह गया कि सारा जगत नाशवान है, किसी के साथ भी मोह नहीं डालना चाहिए ।

किस नालि कीचे दोसती सभ जग चलणहार । कूड़ मिठा कूड़ माखिउ कूड़ डोबे पूर । नानक वखाणै बेनती तुध बाझ कूड़ो कूड़ ।1।

अर्थः- ये सारा जगत है तो छल, पर ये छल सारे जीवों को प्यारा लग रहा है, शहद की तरह मीठा लगता है, इस तरह ये छल सारे जीवों को डुबो रहा है । हे प्रभु ! नानक तेरे आगे अर्ज करता है कि तेरे बिना ये जगत छल है ।

सच ता पर जाणीऐ जा रिदै सचा होई । कूड़ की मल उतरै तन करे हछा धोई ।

अर्थः- जगत रूपी छल की ओर से वासना पलट के, जगत की अस्लियत की समझ तभी आती है जब वह अस्लियत का मालिक ईश्वर मनुष्य के हृदय में टिक जाए । तब माया के छल का असर मन से दूर हो

जाता है फिर मन के साथ शरीर भी सुंदर हो जाता है, शारीरिक इंद्रिय भी गलत राह पर जाने से हट जाती हैं जैसे शरीर धुल के साफ हो जाता है ।

सच ता पर जाणीऐ जा सचि धरे पिआर । नाउ सुणि मन रहसीऐ ता पाए मोख दुआर ।

अर्थः- माया - छल की ओर से मन के विचार हट के, कुदरत की अस्लियत की समझ तभी आती है, जब मनुष्य उस अस्लियत में मन जोड़ता है, तभी उस अस्लियत वाले का नाम सुन के मनुष्य का मन खिलता है और उसे माया के बंधनों से स्वतंत्र होने का रास्ता मिल जाता है ।

सच ता पर जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ । धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ।

अर्थः- जगत के असल, प्रभु की समझ तब ही पड़ती है, जब मनुष्य ईश्वरीय जीवन गुजारने की युक्ति जानता हो, भाव, शरीर रूपी धरती को तैयार करके इसमें प्रभु का नाम बीज दे ।

सच ता पर जाणीऐ जा सिख सची लेई । दइआ जाणै जीअ की किछ पुंन दान करेई ।

अर्थः- सच की परख तभी होती है, जब सच्ची शिक्षा गुरु से ले और उस शिक्षा पर चल के सब जीवों पर तरस करने की विधि सीखे और जरूरतमंदों को कुछ दान - पुन्न करे ।

सच तां पर जाणीऐ जा आतम तीरथ करे निवास । सतिगुरु नो पुछ कै बहि रहै करे निवास ।

अर्थः- उस धुर - अंदर की अस्लियत से तभी जान - पहचान बनती है जब मनुष्य धुर - अंदर के तीर्थ में टिके, अपने गुरु से उपदेश ले के उस अंदर के तीर्थ में बैठा रहे, वहीं सदा निवास रखे ।

सच सभना होइ दारु पाप कढै धोइ । नानक वखाणै बेनती जिन सच पलै होई ।2। पउड़ी ।

अर्थः- नानक अर्ज करता है जिस मनुष्यों के हृदय में अस्लियत का मालिक प्रभु टिका हुआ है, उनके सारे दुखों का इलाज वह स्वयं बन जाता है, क्योंकि वह सारे विकारों को उस हृदय में से धो के निकाल देता है जहाँ वह बस रहा है ।

दान महिंडा तली खाक जे मिलै त मसतकि लाईऐ । कूड़ा लालच छडीऐ होइ इक मनि अलख धिआईऐ ।

अर्थः- मेरा ये चित्त करता है कि मुझे संतों के पैरों की ख़ाक का दान मिले । अगर ये दान मिल जाए, तो माथे पर लगानी चाहिए और लालच, जो माया के जाल में ही फसाता है, छोड़ देना चाहिए, और मन को केवल प्रभु में जोड़ के उसकी भक्ति करनी चाहिए ।

फल ते वेहो पाईऐ जेवेंही कार कमाईऐ । जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ । मत थोड़ी सेव गवाईऐ ।10।

(1-468)

अर्थः- क्योंकि मनुष्य जिस तरह की कार करता है, वैसा ही फल उसे मिल जाता है । पर, संत - जनों के पैरों की ख़ाक तभी मिलती है अगर अच्छे भाग्य हों । गुरमुखों का आसरा छोड़ के यदि अपनी होछी सी मति तुच्छ बुद्धि की टेक रखें तो इस के आसरे की हुई मेहनत व्यर्थ जाती है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"